बिहार सरकार

पशु एवं मत्स्य संसाधन विभाग

(पशुपालन)

दुधारू पशुओं पर ऑक्सीटोसिन (Oxytocin Injection) के दुष्प्रभाव: पशुपालकों के लिए स्मरणीय सलाह

- प्रायः यह देखा जाता है कि पशुपालकों की अज्ञानता के कारण ही उनके पशु बीमार पड़ते हैं अन्यथा उनके शरीर में रोगों से मुकाबला करने की पर्याप्त प्राकृतिक क्षमता होती है। पशुपालकों से भूल न हो तो पशु बहुत कम ही बीमार पड़ते हैं।
- ऑक्सीटोसिन हार्मोन से संबंधित सलाह से पशुपालक अपने पशुओं को रोगग्रस्त होने से सरलता पूर्वक बचा सकते हैं तथा उनके पशुओं की कार्यक्षमता भी निश्चित रूप से बढ़ सकती है।
- ऑक्सीटोसिन एक हार्मोन है जो मस्तिष्क में अवस्थित **Posterior Pituitary Gland** से स्त्रावित होता है जिसका मुख्य कार्य गर्भाशय के संकुचन तथा दूध के ग्रंथि को **Stimulate** कर दूध की मात्रा को बढ़ाना है।
- इस हार्मोन का मुख्य कार्य गर्भाशय को संकुचित करना है, जो पशुओं में प्रसव के दौरान नवजातों को बाहर आने में मदद करता है। इसका दूसरा मुख्य कार्य पशुओं के मैमेरी ग्लैंड (थन) को उत्तेजित कर टीट कैनाल (दूध निकलने की नली) से दूध स्त्रावित करना है।
- कुछ व्यापारिक प्रवृति के पशुपालक पशु के नवजातों को बिल्कुल भी दूध नहीं पीने देते, मात्र बच्चे को उसकी माँ के पास में खड़ा करके ही दूध निकालना प्रारम्भ कर देते हैं। ऐसी दशा में बच्चे कमजोर तथा रोगग्रस्त होकर शीघ्र ही मर जाते हैं। फलतः उस पशु की प्रजनन शक्ति व दुग्ध उत्पादन क्षमता भी धीरे–धीरे कम होकर प्रायः नष्ट हो जाती है। इस प्रकार पशु के बच्चे को दूध न पिलाना एक भयंकर भूल, मूर्खता और पशुओं के प्रति अपराध है।
- बड़े–बड़े शहरों में नवजात पशुओं के मरणोपरान्त कुछ व्यापारिक प्रवृति के पशुपालक दुधारू पशुओं को कुछ ऐसी औषधियों (उदाहरणस्वरूप ऑक्सीटोसिन) का सेवन कराते हैं जिनके प्रयोग से उनका दुग्ध उत्पादन तत्काल तो बढ़ जाता है, किन्तु इस प्रकार अप्राकृतिक ढ़ंग से दूध बढ़ाना आगे चलकर पशु को बिल्कुल ही बेकार कर देता है और फिर वे सामान्य मात्रा में भी दूध नहीं दे पाते हैं। इसलिए लालचवश पशुपालकों को ऐसे तरीके कदापि नहीं अपनाने चाहिए।
- प्रायः ग्वाला दूध दुहने के लिए एक दिन में दो बार ऑक्सीटोसिन इन्जेक्शन का इस्तेमाल करता है जो खर्चीला भी है और पशुओं के लिए कष्टदायक भी है। ऐसा करने से पशुओं का **Reproductive System** कमजोर हो जाता है और वे चार साल बाद बांझ भी हो सकती है।
- इस प्रकार बांझ एवं अनुपयोगी पशु अंत में लावारिश की तरह सड़क पर छोड़ दिये जाते हैं या कसाई को बेच दिये जाते हैं।
- पशुपालकों को सलाह दी जाती है कि वे अपने मन से इस दवा का उपयोग अपने दुधारू पशुओं पर न करें। विशेष परिस्थिति में कुशल पशु चिकित्सक की सलाह पर ही इस दवा का उपयोग करें।
- **Prevention of Cruelty to Animal Act, 1960 section 12 and the Foods and Drug Adulteration Prevention Act, 1960** के तहत ऑक्सीटोसिन का पशुओं में इस्तेमाल करने से रोक लगा दिया गया है।

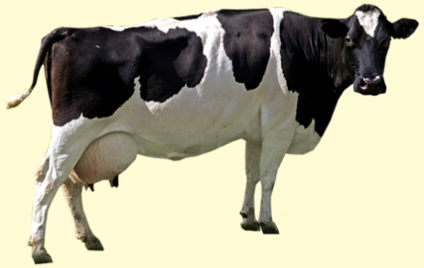

कृत्रिम ऑक्सीटोसिन से प्राप्त दूध से बहुत तरह का बुरा प्रभाव मनुष्यों में पड़ता है जो मुख्य रूप से निम्न प्रकार है :–

- मनुष्यों में सुनने की किया का असंतुलन तथा आँखों की रौशनी में कमी आना।
- मनुष्यों में कमजोरी तथा थकान का अनुभव करना।
- लड़कियों के किशोरावस्था समय से पहले आ जाना आदि।

पशु एवं मत्स्य संसाधन विभाग, बिहार, पटना द्वारा जनहित में प्रचारित